फरीदाबाद
मजदूर समाचार

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,एन.आई.टी.
फरीदाबाद – 121001

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 272 1/- फरवरी 2011

बढती बेरोजगारी, रोटी के बढते दाम, शस्त्रों की-पैसों की पूजा
बढती उथल-पुथल

.....-रूस-अमरीका-इराक-अफगानिस्तान-पाकिस्तान.....-यूनान-फ्रान्स-स्पेन-इंग्लैण्ड-...... -ट्युनिशिया-मिश्र-अल्जिरिया-यमन...... -हैती-बोलिविया-नेपाल-श्री लंका-.......-कोरिया-थाईलैण्ड-बंगलादेश-चीन-भारत-.......

★ ऊँच-नीच। सीढ़ियाँ-पिरामिड ऊँच-नीच के। तने अथवा शिथिल तन और मरे मन। चढना सफलता और फिसलना असफलता। तनावों में वृद्धि। भय और असहायता....ईश्वर-अल्लाह-भाग्य की छतरी। अनिश्चितता और असुरक्षा का छाते जाना।

★ सभ्यता-प्रगति-विकास। पशुओं को नाथना, मनुष्यों में दास-दासी। पीड़ा और हवस धुरियाँ बनी। "मैं" का उदय..... जन्म ही पतन-जीवन ही शाप-जन्म से मुक्ति-मोक्ष एक छोर और अमर होना-अमृत की खोज दूसरा छोर। प्रकृति का दोहन, दासों-भूदासों-दस्तकारों-किसानों-मजदूरों का शोषण। अंश द्वारा सम्पूर्ण पर प्रभुत्व की, मानव योनि द्वारा प्रकृति पर प्रभुत्व की यात्रा। पहुँच गये हैं: 1. व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना का बराबर-सा हो जाना; 2. पृथ्वी पर सब जीवों का अस्तित्व विनाश की कगार पर।

ऐसे में उथल-पुथल, बढती उथल-पुथल आशा की किरण है। जो कुछ परोसा गया है, जो कुछ परोसा जा रहा है उसे जाँचने-परखने, उसकी चीर-फाड़ की गति तीव्र हो रही है, पैमाना व्यापक हो रहा है। करोड़ों लोगों के तन-मन-मस्तिष्क हलचल में हैं। सम्पूर्ण पृथ्वी सामाजिक मन्थन का अखाड़ा बनी है। अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान हर किसी के लिये और भी अधिक आवश्यक हो गया है।

अपहरण के खतरे वास्तविक हैं। चुटकियों में समाधान वाले नुस्खों का व्यापक प्रभाव है। व्यवहार, हाँ व्यवहार ही इन्हें आजमा कर ठुकरायेगा। तीव्र से तीव्रर होती उथल-पुथल किसी को भी अब अधिक समय नहीं देगी। लाखों-करोड़ों ने एक समय जिन्हें समाधान माना था उन्हें समस्या पा कर छिटकने में देर नहीं लगायेंगे। बेशक, नादानी की कीमत रक्त में अदा करनी होगी। लेकिन इस सब से डरने की बजाय अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान बढा कर इनकी सम्भावनायें घटाना बनता है।

●शस्त्र और शास्त्र का ऊँच-नीच, सभ्यता से निकट का रिश्ता है। दोहन-शोषण के लिये मानसिक दासता और दमन का बहुत प्रयोग हुआ है। प्रगति-विकास से जुड़ा विज्ञान शोषण की मात्रा में छलाँगों के संग बढते विरोध से निपटने के लिये शस्त्रों और शास्त्रों की बाढ लाया है। लाठी से डर लगता है..... और आधुनिक पुलिस-सेना-गुप्तचर तन्त्र के बावजूद हजारों-लाखों-करोड़ों लोग विरोध में सामने आ रहे हैं। और, यह किसी क्षेत्र-किसी देश-किसी धर्म-किसी शासन स्वरूप के दायरे तक सीमित नहीं हैं।

● आज विश्व-भर में मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन का बोलबाला है। अपनी व परिवार की मेहनत से मण्डी के लिये उत्पादन करने वाले, दस्तकारों और किसानों की सँख्या उल्लेखनीय है।

— अमरीका, कनाडा, पश्चिमी यूरोप में दस्तकार-किसान समाप्त-से हो गये हैं। यह क्षेत्र मजदूरी-प्रथा का शिखर है। आज यहाँ नौकरी नहीं मिलती...... अमरीका सरकार ने बेरोजगारों की बहुत बड़ी सँख्या, 28 लाख लोगों को जेलों में बन्द कर रखा है। अमरीका में दिवालिया हुये बैंकों की सँख्या 2009 में 140 थी और 2010 में 157— इधर जनवरी में 14 बैंक फेल हो चुके हैं। यूरोप में कर्जों में डूबी, दिवालियेपन की कगार पर खड़ी सरकारों के नौकरियों में और कटौती के प्रयास लाखों मजदूरों तथा छात्रों को विरोध में सड़कों पर ला चुके हैं। जापान में बच्चों द्वारा आत्महत्यायें.....

— दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, एशिया में करोड़ों दस्तकार और किसान हैं। इन पचास वर्षों में इन क्षेत्रों में करोड़ों मजदूर भी हो गये हैं। इधर उत्पादन तथा अन्य क्षेत्रों में इलेक्ट्रोनिक्स के प्रवेश ने बड़ी सँख्या में नौकरियाँ समाप्त की हैं। इलेक्ट्रोनिक्स ने दस्तकारों और किसानों की सामाजिक मौत, सामाजिक हत्या की गति भी तेज कर दी है। लाखों दस्तकारों-किसानों द्वारा आत्महत्या करना, हजारों द्वारा सरकारों के खिलाफ हथियार उठाना, सैंकड़ों का आत्मघाती बम बनना....चीन में पुलिस से भिड़ते मजदूर, बंगलादेश में फैक्ट्रियों को आग लगाते मजदूर..

●ऐसे में तीव्रतर गति से हालात बद से बदतर होंगे। इसलिये उथल-पुथल बढेंगी। अलग-अलग क्षेत्रों और भिन्न-भिन्न समय के अनुभव तथा विचार हमें विरासत में मिले हैं। वर्तमान की हलचलों और आने वाली उथल-पुथलों के दौरान अपने व्यवहार को अधिक कारगर बनाने के लिये अपनी विरासत को जानना-समझना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में, हमारे विचार से, कुछ महत्वपूर्ण बातें यह हैं :

— नेता, पार्टी, झण्डा, सीमा बदलना गौण बातें हैं। सिंहासन खाली करो..... की जगह सिंहासनों को तोड़ना बनता है। थानेदार कौन हो की बजाय थानेदारी नहीं चाहिये। जिन जन उभारों में जेलें तोड़ी गई, अदालतें समाप्त की गई, पुलिस और सेना भंग की गई उन जन उभारों में ही राहें कुछ खुली। राजसत्ता को, सरकारों को ध्वस्त करना मुक्ति का प्रस्थान-बिन्दू है। यूँ भी, पुलिस और सेना की वर्दी में अधिकतर किसानों, मजदूरों की सन्तानें हैं।

— बेरोजगारी से त्रस्त..... नौकरी में जलालत, अधम चाकरी। सिकुड़ते रोजगार, घटती नौकरियाँ, बढती बेराजगारी हमारे सम्मुख हैं। इसलिये उथल-पुथल के दौरान काम का अधिकार माँगना बेहूदी बात है। मिल कर उत्पादन करना और बाँट कर खाना, मजदूरी-प्रथा के उन्मूलन की दिशा में प्रारम्भिक कदम हैं।

— भ्रष्टाचार और रिश्वत। रुपये-पैसे के महत्व के साथ इनका निकट रिश्ता है। मण्डी और रुपये-पैसे एक-दूसरे के पूरक हैं। लाभ, हानि और होड़ मण्डी के चरित्र में हैं। काला पैसा अथवा सफेद पैसा की बातें कानून अनुसार शोषण अथवा कानून से परे शोषण जैसी चर्चा है। जैसे कानून हैं ही शोषण के लिये, वैसे ही रुपये-पैसे मण्डी के पूरक हैं। होड़ की बजाय सहयोग और खरीद-बिक्री की बजाय उपहार उथल-पुथल के दौरान महत्वपूर्ण कदम होते हैं।

—लाभ और हानि। क्या फायदा ? यह बातें ऊँच-नीच में आमतौर पर और मण्डी-मुद्रा के दबदबे में खासकरके हम सब को लहुलुहान करती हैं। मतलब हो तब मिलना.....छिछले-सतही-क्षणिक रिश्ते। लाभ और हानि का मकड़जाल हर सम्बन्ध को कामकाजी-औपचारिक रिश्ते में सिकोड़ रहा है। लाठी-गोली के सम्मुख आना, हानि-लाभ की दीवारों को फाँदना हर उथल-पुथल का चमत्कारी पहलू है। **(बाकी पेज चार पर)**

फरीदाबाद में मजदूर

कुंज बिहारी टैक्सटाइल प्रोसेसेज मजदूर: "प्लॉट 95-96 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 2500-3000 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी. एफ. 50-60 की ही हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। रोज 12 घण्टे पर महीने के 4800 रुपये। रिलीवर नहीं आने पर तो रुकना पड़ता ही है, रिलीवर आने पर भी जबरन रोक लेते हैं। बारह घण्टे के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं और उसका भुगतान भी सिंगल रेट से। लगातार 36 घण्टे ड्युटी के लिये रोकते हैं तब रोटी के लिये मात्र 25 रुपये देते हैं – 12 घण्टे में तो एक कप चाय भी नहीं। पीने का पानी खारा है। मात्र 6 शौचालय 3000 मजदूरों के लिये – बहुत गन्दे रहते हैं।"

विभा एग्जिम अल्युमिनियम श्रमिक : "गुरुकुल औद्योगिक क्षेत्र में भारत गियर फैक्ट्री के पास स्थित फैक्ट्री में 150 पुरुष और 150 महिला मजदूर कन्टेनरों में आते कबाड़े की छँटाई कर उसे भट्ठियों में गलाते हैं। पुराने गोले, मिसाइल भी कबाड़े में आते हैं। विस्फोटों से मजदूर जल जाते हैं, डर कर छोड़ भी जाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 30-40 मजदूरों की ही हैं, ज्यादा जलने पर ई.एस.आई. करवाते हैं। महिला मजदूरों की सुबह 9 से साँय 6 की ड्युटी और तनखा 2500-3000 रुपये। पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट। चार ऑपरेटरों की तनखा 6000-7500 रुपये और बाकी सब की 3000-3400 रुपये। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

कलर लाइन कामगार : "151 डी एल एफ फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 4500 और ऑपरेटरों को 5000 रुपये। तनखा 15 तारीख के बाद। ई.एस. आई. व पी.एफ. 2-4 की ही हैं।"

कास्टमास्टर वरकर : "प्लॉट 46 व 64 सैक्टर-6 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 7 ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बारह घण्टे बाद जबरन रोकते हैं तब रोटी के लिये बस 20 रुपये देते हैं। तनखायें 2700-3200-3700 रुपये। जो दो ठेकेदार 3700 देते हैं वे तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं। तनखा देरी से, दिसम्बर की 14 जनवरी को दी। गड़बड़ी कर हर महीने ओवर टाइम के घण्टों में से एक-दो दिहाड़ी खा जाते हैं। निर्धारित उत्पादन बहुत ज्यादा – 12 घण्टे में चाय के लिये 5 मिनट भी नहीं देते। पीने का पानी खारा। शौचालय गन्दे।"

वी जी प्रिसिजन कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 327 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में **मारुति सुजुकी** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं। कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई नहीं, पी.एफ. नहीं। अधिक एक्सीडेन्टों के कारण ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों की ई.एस.आई. है पर पी.एफ. नहीं। सत्तर में 55 मजदूरों की तनखा 3000-4000 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सात-आठ वर्ष से लगातार काम कर रहे कैजुअल ही हैं, बोनस में एक महीने की तनखा देते हैं। ठेकेदार के जरिये रखों को बोनस में 50-100 रुपये ही। लोहे की कास्टिंग व फिनिशिंग के कारण प्रदूषण बहुत ज्यादा है।"

जी एल ऑटो श्रमिक : "14 बी इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 25 महिला मजदूरों की तनखा 2700-3000 रुपये और 500-600 पुरुष मजदूरों की 3000-3500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कुछ मजदूरों को कैजुअल वरकर कहते हैं और कुछ को ठेकेदारों के जरिये रखे। स्थाई मजदूर बहुत कम हैं और इन में से 6-7 को तो अन्दर वाले ठेकेदार भी बना रखा है। तीन बाहर के ठेकेदार हैं। दो शिफ्ट हैं 12½-12½ घण्टे की और फिर जबरन भी रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लेकिन, रविवार को काम पर बुलाते हैं तब पैसे दुगुनी दर से देते हैं। जब 12½ घण्टे बाद रोकते हैं तब रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। तनखा देरी से, दिसम्बर की आज 14 जनवरी तक नहीं दी है। पुरुष मजदूरों के लिये मात्र 3 शौचालय, बहुत गन्दे रहते हैं।"

फाल्कन कामगार : "98 रामस्वरूप कॉलोनी, मुजेसर स्थित फैक्ट्री में 60 मजदूर गाय के दूहने की मशीन, पम्प तथा प्रिन्टिंग प्रेस के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। हैल्परों की तनखा 3500 और ऑपरेटरों की 4000-4200 रुपये। ई.एस.आई. तीन मजदूरों की, पी.एफ. किसी की नहीं। शौचालय नहीं है।"

एल्पिया पैरामाउन्ट वरकर : "प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 300 मजदूर **व्हर्लपूल, सैमसंग, एल जी** फ्रिज के प्लास्टिक पार्ट्स बनाते हैं। रविवार को भी ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 20 मजदूरों की ही। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये। पीने का पानी खारा। शौचालय बहुत गन्दे।"

सिटी टैक्सटाइल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "18 डी एल एफ फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई करते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। हैल्परों की तनखा 2960, ऑपरेटरों की 3200-3400 रुपये, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जिन 20 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं उन से हस्ताक्षर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन पर करवाते हैं पर देते अन्य मजदूरों वाली तनखा ही हैं। सीवर जाम होता ही रहता है, फैक्ट्री में रसायन-युक्त पानी भर जाता है जिसमें चलने से बीमारी तो होती ही है, करन्ट लगने का डर भी बना रहता है।"

एस टी एल ग्लोबल श्रमिक : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई होती है। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 4500 और ऑपरेटरों को 6000 रुपये देते हैं। तनखा देरी से – नवम्बर का वेतन 26 दिसम्बर को दिया था और दिसम्बर का आज 20 जनवरी तक नहीं दिया है। रविवार की ड्युटी को ओवर टाइम कहते हैं पर भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। सात सौ के करीब मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 12 के ही हैं। पीने का पानी खारा। शौचालय गन्दे।"

मार्शल ग्रुप कामगार : "प्लॉट 390 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मज़दूर एक भी नहीं है। यहाँ 11 सी एन सी ऑपरेटर तथा 20 डिस्पैच व पैकिंग वाले कैजुअल वरकर और ठेकेदार के जरिये रखे 120 मजदूर **एस्कोर्ट्स, होण्डा, टी वी एस** तथा निर्यात के लिये वाहनों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। हैल्परों की तनखा 3200-3500, डिस्पैच व पैकिंग वालों की 3500 और ऑपरेटरों की 4000-4500 रुपये। ड्युटी 12 घण्टे की, ओवर टाइम सिंगल रेट से। लोहे की कास्टिंग, फोरजिंग, फिनिशिंग है – भारी प्रदूषण है। साहब बहुत गाली देते हैं।"

दीपक इन्टरप्राइजेज वरकर : "25/7 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 3000 और ऑपरेटरों की 4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। रोज 12 घण्टे ड्युटी, रविवार को 5 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

नोवा पैक श्रमिक : "नोरदर्न कॉम्पलैक्स, मथुरा रोड स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500 और कारीगरों की 4300-4400 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की, रविवार को 9 घण्टे काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ **हेल्ला लाइट** का कार्य होता है।"

लखानी रबड़ कामगार : "प्लॉट 262 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में **मारुति सुजुकी** की होज पाइप आदि बनती हैं। रबड़ का काम है, गन्दा है – मारुति वाले आते हैं तब ही मजदूरों को दस्ताने, मास्क देते हैं। इधर 24 दिसम्बर से मारुति में उत्पादन बन्द है इसलिये यहाँ काम मन्दा है, अन्यथा 12-12 घण्टे की शिफ्ट रहती हैं। ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से। दो महीने से ठेकेदार के जरिये भर्ती चल रही है और इन मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

फ्ल्यूरी एक्सपोर्ट वरकर : "99 डी एल एफ फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 3500-4000 रुपये। सिलाई कारीगरों में कुछ तनखा पर और कुछ पीस रेट पर। सुबह 9 से रात 9 तक काम, रात 12 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. व पी.एफ. 150 मजदूरों में 75 के। पीने का पानी खारा।"

बत्रा एसोसियेट्स मजदूर : "प्लॉट 77 सैक्टर-27 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट। आठ स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और ठेकेदार के जरिये रखे 60 वरकरों को सिंगल रेट से।"

लखानी वरदान ग्रुप श्रमिक : "प्लॉट 122, 131, 144, 244, 265...... सैक्टर-24 स्थित समूह की फैक्ट्रियों में हर महीने तनखा देरी से, दिसम्बर की आज 15 जनवरी तक नहीं दी है।"

गुड़गाँव में मजदूर

पहली जनवरी 2011 से देय महँगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा हरियाणा सरकार ने फरवरी आरम्भ तक नहीं की है। ऐसे में निर्धारित न्यूनतम वेतन *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4348 रुपये (8 घण्टे के 167 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4998 रुपये (8 घण्टे के 192 रुपये)।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ

शिवांग एक्सपोर्ट मजदूर : " 146 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में हर रोज सुबह 9 से रात 11 बजे की ड्युटी है और अगली सुबह 8 बजे तक रोक लेते हैं। फैक्ट्री में प्रवेश का समय है, छूटने का कोई समय नहीं। जबरन रोकते हैं, निकलने ही नहीं देते। रविवार को भी रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150-250 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से, हेराफेरी कर हर महीने 200-500 रुपये खा भी जाते हैं। सुबह 9 से रात 11 पर रोटी के लिये 15 रुपये देते हैं – कैन्टीन नहीं है और बाहर निकलने नहीं देते, छूटने पर घर (कमरे) जा कर खाओ। रात 2 अथवा उसके बाद तक रोकते हैं तब रोटी के लिये 20 रुपयें और रात 8 बजे एक घण्टे के लिये निकलने देते हैं, इस एक घण्टे को ओवर टाइम में से काट लेते हैं। कम्पनी 14-23 घण्टे के दौरान एक कप चाय भी नहीं देती। फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूर हैं – ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी भी मजदूर की नहीं हैं। धागे काटने वाली महिला मजदूरों की तनखा 3800-4000, पैकिंग हैल्परों की 4200-4300 रुपये। सिलाई कारीगर पीस रेट पर अथवा 8 घण्टे के 170-175 रुपये की दिहाड़ी पर। तनखा हर महीने देरी से, दिसबर की 15-16 जनवरी को दी। पीने के पानी की बहुत दिक्कत। और, शौचालयों में तो पानी ही नहीं.... बहुत गन्दे रहते हैं। कपनी की 669, 670, 671 फेज-5 स्थित फैक्ट्री में भी यही सब है।"

एनरिच एग्रो फुड प्रोडक्ट्स श्रमिक : "276-277 उद्योग विहार फेज-2 में **कोका कोला** का बॉटलिंग कारखाना है। यहाँ दो ठेकेदारों के जरिये रखे 125 मजदूरों की तनखा 3000-3200 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। इधर सर्दी में, दिसम्बर-फरवरी के दौरान बहुत-ही कम ओवर टाइम, शेष वर्ष में रोज 12-14 घण्टे की ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

रोलैक्स कामगार : " 695-696 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में नौकरी छोड़ने पर 10-12 दिन किये काम के पैसों के लिये बहुत परेशान करते हैं – कभी कहते हैं कि पैसे खत्म हो गये, कभी कहते हैं कि पैसे दूसरी जगह भेज दिये है, कभी कहते हैं कि फलाँ आयेगा तब मिलेंगे..."

चेल्सिया मिल वरकर : "360 उद्योग विहार फेज-4 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 10 की ड्युटी है और फिर रात 1 बजे तक, अगली सुबह 6 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रात 11 बजे के बाद रोकने पर रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। यहाँ 800 पुरुष और 200 महिला मजदूर काम करते हैं। साहब गाली देते हैं, मारपीट भी करते हैं।"

सुरक्षा कर्मी : "अप्पु घर के पास, कापसहेड़ा में कार्यालय वाली **डी एस एफ सेक्युरिटी** गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाती है। साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 5200-6000 रुपये। खड़े-खड़े की ड्युटी, सुस्ताते देख लिये तो 200 रुपये काट लेते हैं। तनखा से ई.एस.आई. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। पी.एफ. के प्रावधान लागू ही नहीं किये हैं।"

सान इन्टरनेशनल वरकर : " उद्योग विहार में 203 फेज-1, 463 फेज-3 और फेज-4 में 257, 260, 288 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में **न्यू लुक, पिन्की, बोग्ले, ई एस टी** के लिये परिधान तैयार किये जाते हैं। यहाँ आजकल प्रतिदिन सुबह 9½ से रात 1½ बजे की ड्युटी है – महिला मजदूरों की सुबह 7 से रात 9 बजे की। रविवार को साँय 5½, रात 8 बजे छोड़ देते हैं। महीने में 200-225 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। सिलाई कारीगरों और हैल्परों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। शौचालय बहुत-ही कम, पानी कभी होता है तो कभी नहीं होता और पुरुष शौचालयों के तो दरवाजे हैं ही नहीं।"

वी एस इन्टरप्राइजेज मजदूर : " 428 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **ऋचा, मोडलामा, मामा मैसी, गैप** का इम्ब्राइड्री का काम होता है। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के हैल्परों को 4000 और ऑपरेटरों को 6000 रुपये। दिसम्बर की तनखा 15 जनवरी को दी। हैल्परों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

ऋचा एण्ड कम्पनी श्रमिक : " 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे 50 इस्त्री करने वालों और धागे काटने वाली 50 महिला मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. के 500-600 रुपये काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर मजदूरों को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। इन 500-600 के अलावा 200-400 रुपये काटते है, गड़बड़ कर हर महीने खा जाते हैं। नौकरी छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं। गाली देते हैं। सुबह 9¼ से रात 9¾ बजे की ड्युटी है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। तनखा हर महीने देरी से, दिसम्बर की 17 जनवरी को दी।"

एफ आई एस कामगार : " 226 उद्योग विहार फेज-1 स्थित कॉल सेन्टर में चार ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हाउसकीपिंग वालों की तनखा 3700 रुपये..... इलेक्ट्रिशियनों की तनखा के तौर पर ठेकेदार को कम्पनी 7800 रुपये देती है, मजदूर को मिलते हैं 5300 रुपये।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : " उद्योग विहार स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को दिसम्बर की तनखा 20 जनवरी को दी...... स्टाफ को आज, 29 जनवरी तक नहीं दी है।"

इनस्टाइल मजदूर : "134 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में महीने में 100-200 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। तनखा से ई.एस.आई. व पी.एफ. की राशि काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे निकालने का फार्म कम्पनी भरती ही नहीं। पी.एफ. के सम्बन्ध में यही स्थिति कम्पनी की 378 फेज-2 स्थित फैक्ट्री में है।"

ऋचा ग्लोबल श्रमिक : "232 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग तथा वाशिंग में ठेकेदारों के जरिये रखे 250-300 मजदूरों को कहने को निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं.... 4349 रुपये तनखा में से 500-550 रुपये ई.एस.आई. व पी.एफ. के काटते हैं पर इनके अलावा हर महीने 400-500 रुपये और भी काटते हैं, खा जाते हैं।"

आई एम टी मानेसर

ट्रैक ऑटो कम्पोनेन्ट्स मजदूर : " प्लॉट 21 सैक्टर-7 स्थित फैक्ट्री में अधिक उत्पादन के लिये पावर प्रेसों से सुरक्षा उपकरण हटाने का सिलसिला जारी है। पहले से कार्यरत मशीनों से हटाये सुरक्षा उपकरण पुनः लगाने का प्रबन्ध करने के बाद भी वे नहीं लगाये गये हैं। इधर नई पावर प्रेसें आ रही हैं और उनके भी सुरक्षा उपकरण कम्पनी हटा रही है। अधिक उत्पादन के लिये अधिक मजदूरों के हाथ कटने का यह प्रबन्ध है।"

कुमार प्रिन्टर्स श्रमिक : " प्लॉट 24 व 38 सैक्टर-5 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में मैनेजमेन्ट ने नोटिस लगाया कि मशीन में पंच हो कर मरे मजदूर के परिवार की सहायता के लिये हर मजदूर की 12 घण्टे की एक दिहाड़ी काटी जायेगी। कम्पनी क्या देगी इसका नोटिस में जिक्र नहीं। इधर 30 दिसम्बर को प्लॉट 38 में 12 घण्टे ड्युटी कर चुके एक मजदूर को प्लॉट 24 में जा कर 12 घण्टे और काम करने को कहा। वरकर ने मना किया तो मैनेजर ने सुपरवाइजर से कहा कि उसे निकाल दो।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✱अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते। ✱ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहिये उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये। ✱ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार छापते हैं, 9000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

दिल्ली में मजदूर

अगस्त 2010 से देय मँहगाई भत्ता (डी ए) की घोषणा दिल्ली सरकार द्वारा फरवरी 2011 आरम्भ तक नहीं। अकुशल श्रमिक 5278 रुपये (8 घण्टे के 203 रुपये); कुशल श्रमिक 6448 रुपये (8 घण्टे के 248 रुपये)। पच्चीस-पचास पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली–110054

फैशन फ्लेयर-साक्षी इन्टरनेशनल मजदूर : "ए-189 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 10 बजे की शिफ्ट है और रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ काम करते 600 मजदूरों में 50 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन 50 की तनखा 5278 एवं 5850 रुपये है। बाकी 550 मजदूरों में सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 200 व 220 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे हैल्परों की तनखा 4200 रुपये और ठेकेदार के जरिये रखों की 3200 रुपये। इधर 5-6 महीनों से हेराफेरी कर अधिकतर मजदूरों के हर महीने 400 से 1000 रुपये साहब लोग खा जाते हैं। प्रोडक्शन इन्चार्ज बहुत गाली देता है।"

अरावली प्रिन्टिंग प्रेस श्रमिक : " डब्लू-30 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 75 मजदूरों में 20 की ही। शौचालय बहुत गन्दे। यहीं स्थित कम्प्युटर डिजाइनिंग वाली **के बी आर फ्रेमर** में पुराने वरकरों की तनखा 5278 और नयों की 4000-4500 रुपये। सुबह 9½ से साँय 6½ की ड्युटी और रात 2 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

बुटीक ग्लोबल वरकर : " डी-80 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में काम करते 700 मजदूरों में 200 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। सिलाई में हैल्परों की 5278 और कारीगरों की 6448 रुपये तनखा। फिनिशिंग में महिला मजदूरों की तनखा 3000-3500 रुपये। सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है। महीने में 4-5 रोज रात 9 बजे छोड़ते हैं, 5-6 दिन अगली सुबह 4 बजे छोड़ते हैं और बाकी के रोज रात 11 बजे तक काम। महिला मजदूरों को रात 11 बजे तक ही रोकते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के हर दिन काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। भर्ती के समय पूछते हैं: हड्डी चाहिये कि गड्डी चाहिये? हड्डी चाहिये तो बाहर ही रहो।"

स्कॉर्पिओ एपरेल्स मजदूर : "सी-30 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 50 पुरुष और 550 महिला मजदूर काम करते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. मात्र 50 मजदूरों की हैं। पुरुष सिलाई कारीगरों की तनखा 6448 और महिला कारीगरों की 5850 रुपये। हैल्परों का वेतन 5278 रुपये। महीने में 20-25 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। निर्धारित उत्पादन बहुत अधिक है, डाँटते रहते हैं। पानी-पेशाब के लिये टोकन, 30 महिला मजदूरों के बीच एक टोकन।"

वायरल बुखार

डॉक्टर भाई : " दवा लेंगे तो हफ्ते में ठीक हो जायेंगे। दवा नहीं लेंगे तो सात दिन में ठीक हो जायेंगे।"

नोएडा में मजदूर

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक को 8 घण्टे के 151 रुपये 92 पैसे; अर्ध-कुशल श्रमिक 8 घण्टे के 173 रुपये 18 पैसे; कुशल श्रमिक 8 घण्टे के 192 रुपये 23 पैसे।

जे पी सी मजदूर : " ए-45 सैक्टर-83, नोएडा स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में कपड़ों की रंगाई-छपाई करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. 50 मजदूरों की ही, और इन 50 को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5500 रुपये। बाकी 250 मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 4500 रुपये। इन 250 की तनखा से भी ई.एस.आई. व पी.एफ. के 500 रुपये काटते हैं पर इन्हें ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और छोड़ने पर इन्हें फण्ड के पैसे नहीं मिलते। तनखा देरी से, 15 तारीख के बाद। पीने का पानी खराब। शौचालय गन्दे। सुपरवाइजर, जॉबर गाली देते हैं।"

सुरक्षा कर्मी : " सैक्टर-34, नोएडा में मुख्यालय वाली **आयरनमैन सेक्युरिटी** गुड़गाँव, दिल्ली, फरीदाबाद, नोएडा में 7000 से ज्यादा गार्ड सप्लाई करती है। गार्डों से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाते हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं। रोज 12 घण्टे पर 30 दिन के 5000 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. मुश्किल से 500 गार्डों की होंगी। खड़े रहो, साहबों को सेल्युट मारो, मजदूरों की तलाशी लो — बहुत अखरता है।"

भिवाड़ी में मजदूर

राजस्थान सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्ध कुशल श्रमिक 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल श्रमिक 5330 रुपये (8 घण्टे के 205 रुपये)।

जैकुआर मजदूर : " रीको चौक तथा नीलम चौक, भिवाड़ी स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में 1500 और 1200 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में स्नानागारों के लिये मुख्यतः पीतल की फिटिंग्स बनाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से — पे स्लिप में ओवर टाइम नहीं दिखाते। हैल्परों की तनखा 3300 और कारीगरों को 4200-4500 रुपये। बोनस 20 प्रतिशत देते हैं।"

बढती उथल–पुथल....... (पेज एक का शेष)

बिना मतलब के मिलना, अच्छा लगता है इसलिये मिलना — जन उभार के समय इसका व्यापक पैमाना नई समाज रचना की राहों को चौड़ा करता है।

— रफ्तार पर ब्रेक...... उथल-पुथल घड़ी की सूईयों को थाम देती है। नौकरी-चाकरी में जुटे समय नहीं है वालों के चेहरे चमकने लगते हैं। समय काटे नहीं कटता वाले बेरोजगारों के चेहरे दमकने लगते हैं। समय का अभाव-अकाल और समय का बोझ बनना वर्तमान के चरित्र में हैं। सम्बन्ध के लिये समय प्राथमिक आवश्यकता है। समय के अभाव में कटुता की फसल...... सम्बन्ध बनाने से बचना, सम्बन्ध से डरना। अकेलेपन की महामारी....... तीव्र से तीव्रतर होती गति और बढती चमक-दमक का दूसरा पहलू समय का अकाल है। जन उभार में समय का ठहर जाना हँसी-खुशी-उल्लास की व्यापक झलक दिखा कर नई समाज रचना की इच्छा को उभारता है। बहुत गहरे से प्रेम और उल्लास की हूक उठ रही है..... सब घड़ियों को संग्रहालयों में रखने का समय आ गया है।

— गति का उत्पादन मुख्यतः मजदूरों के तन और मन को लहुलुहान करता है। गति का उपभोग हर किसी को धार पर धरता है — सड़कें ही, भारत सरकार के क्षेत्र में ही प्रतिवर्ष एक लाख से ऊपर हत्यायें और 12-15 लाख को गम्भीर रूप से घायल कर रही हैं। गति का उत्पादन व उपभोग अकेले ही पृथ्वी को उलट-पलट रहा है, पर्यावरण प्रदुषण..... और, तीव्र गति मनोरोगों की महामारी लाई है। ऐसे में उथल-पुथल के दौरान चक्कों का ठहर जाना सोचने-विचारने के लिये अवसर प्रदान करता है। मनुष्यों के बीच मधुर सम्बन्धों और प्रकृति के संग सौहार्दपूर्ण रिश्तों के लिये कितनी और कैसी गति चाहिये.....

— कब, कहाँ, कौनसी बात उथल-पुथल की लहर को उभार देगी यह कोई नहीं जानता-जानती। इस सम्बन्ध में शोषण-नियन्त्रण-दमन तन्त्र की तैयारियाँ धरी रह जाती हैं। लेकिन, नियन्त्रण की पुनः स्थापना के लिये विकल्प का जुगाड़ रखना बड़े तन्त्रों की सामान्य क्रिया बन गई है। काबू से बाहर होने लगे तो उथल-पुथल का समर्थन कर उसे नई सरकार बनाने की दलदल में धकेल देना..... इधर जन उभार तेजी से क्षेत्र-देश की सीमाओं को लाँघने लगे हैं। " मजदूरों का कोई देश नहीं होता" और मण्डी-मुद्रा आधारित ऊँच-नीच वाली व्यवस्था की सत्ता-शासन के लिये जनतन्त्र बेहतरीन साँचा है की समझ को डेढ सौ से ज्यादा वर्ष हो गये हैं। सीमाओं और सरकारों को मिटाने की दस्तकों को अनसुना करना एटम बमों वाले युद्ध की तैयारी को मौन समर्थन देना है।

आईये, छवि को ढोने की बजाय जीवन जीने के पथ पर कदम बढायें। आईये, उथल-पुथल में उभर कर सामने आते मिल कर कदम उठाने, आपस में सहयोग करने, हानि-लाभ के कुँये से बाहर निकलने, सम्बन्धों को समय देने को अपने दैनिक जीवन की सामान्य क्रियायें बनायें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011